कक्षा-10

गोधूलि

भाग-2

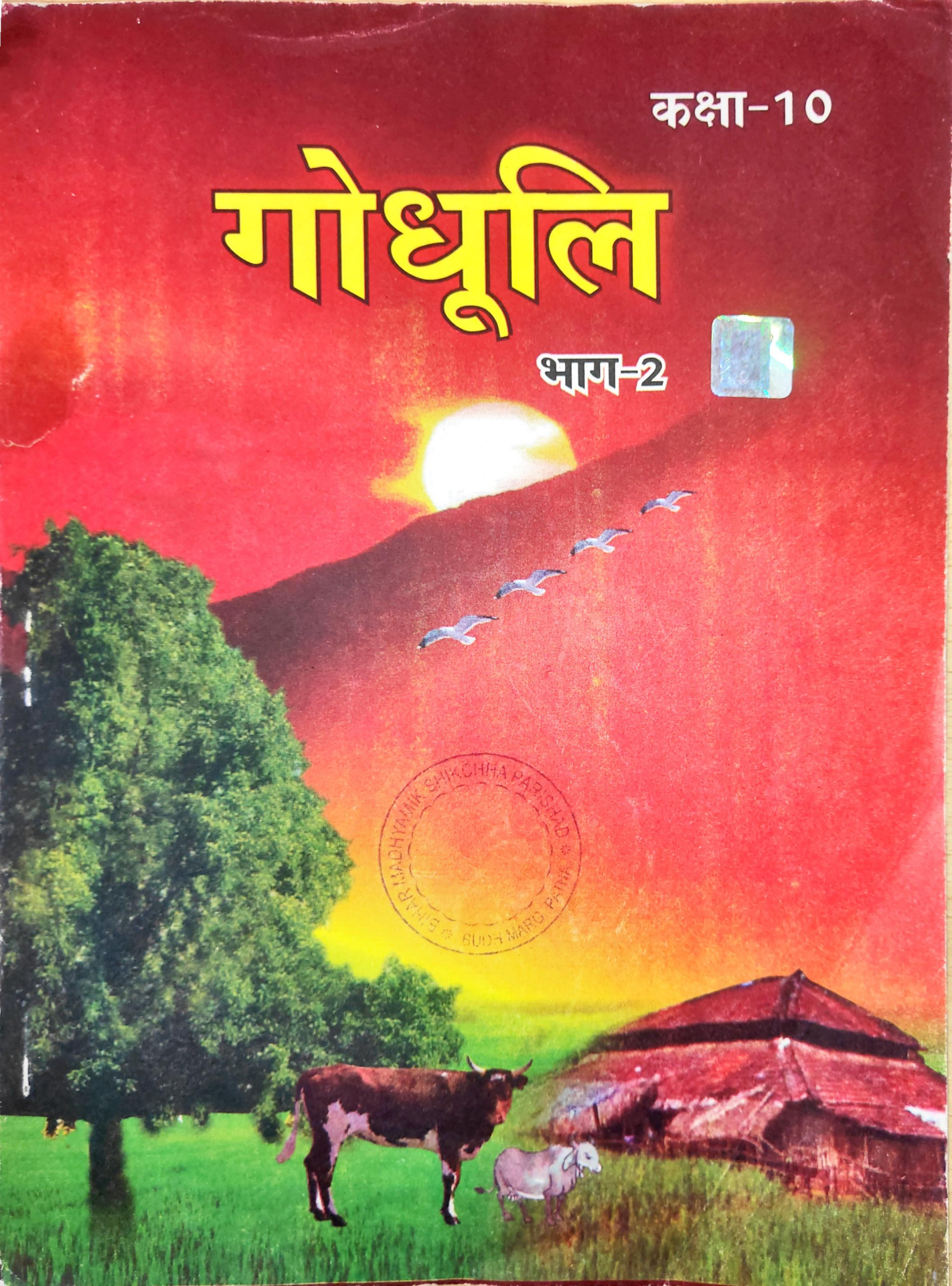

प्राक्कथन

मानव संसाधन विकास विभाग, बिहार सरकार के निर्णयानुसार अप्रैल, 2009 से प्रथम चरण में राज्य के कक्षा IX हेतु नए पाठ्यक्रम को लागू किया गया है। इसी क्रम में शैक्षिक सत्र 2010 के लिए वर्ग I, III, VI एवं X की सभी भाषायी एवं गैर भाषायी पुस्तकों का पाठ्यक्रम लागू किया जा रहा है। इस नए पाठ्यक्रम के आलोक में एन॰सी॰आर॰टी॰, नई दिल्ली द्वारा विकसित वर्ग X की गणित एवं विज्ञान तथा एस॰सी॰ई॰आर॰टी॰, बिहार, पटना द्वारा विकसित वर्ग I, III, VI तथा X की सभी पुस्तकें बिहार राज्य पाठ्यपुस्तक प्रकाशन निगम द्वारा आवरण चित्रण कर मुद्रित की जा रही हैं।

बिहार राज्य में विद्यालयीय शिक्षा के गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए मुख्यमंत्री, बिहार श्री नीतीश कुमार, मानव संसाधन विकास मंत्री, श्री हरिनारायण सिंह तथा मानव संसाधन विकास विभाग के प्रधान सचिव, श्री अंजनी कुमार सिंह के मार्गदर्शन के प्रति हम हृदय से कृतज्ञ हैं।

एन॰सी॰ई॰आर॰टी॰, नई दिल्ली तथा एस॰सी॰ई॰आर॰टी॰, बिहार, पटना के निदेशक के हम आभारी हैं, जिन्होंने अपना सहयोग प्रदान किया।

श्री बसंत कुमार, शैक्षिक निबंधक, बिहार राज्य पाठ्यपुस्तक प्रकाशन निगम लिमिटेड के सफल प्रयास एवं सहयोग का आभारी हूँ, जिन्होंने दल-भावना के अनुरूप कार्यों का संपादान कराया है।

बिहार राज्य पाठ्यपुस्तक प्रकाशन निगम छात्रों, अभिभावकों, शिक्षकों, शिक्षाविदों की टिप्पणियों एवं सुझावों का सदैव स्वागत करेगा, जिससे बिहार राज्य को देश के शिक्षा जगत में उच्चतम स्थान दिलाने में हमारा प्रयास सहायक सिद्ध हो सकें।

आशुतोष, भा॰व॰से॰
प्रबंध निदेशक
बिहार राज्य पाठ्यपुस्तक प्रकाशन निगम लि॰

संरक्षण

श्री हसन वारिस, निदेशक, राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार ।
श्री रघुवंश कुमार, निदेशक (शैक्षणिक), बिहार विद्यालय परीक्षा समिति (उच्च माध्यमिक प्रभाग), पटना ।
डॉ० कासिम खुर्शीद, अध्यक्ष, भाषा विभाग, राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार ।

पाठ्यपुस्तक विकास समिति

प्रो० भृगुनंदन त्रिपाठी, हिंदी विभाग, पटना विश्वविद्यालय, पटना ।
डॉ० हेमंत कुमार हिमांशु, सहायक संपादक, ज्ञान विज्ञान, पटना ।
डॉ० मधुमंजरी, व्याख्याता, जे. डी. महिला कॉलेज, पटना ।
डॉ० नीलिमा सिंह व्याख्याता, बी. डी. कॉलेज, पटना ।
डॉ० भारती कुमारी सिंह, शिक्षक नवोदय विद्यालय, किशनगंज ।
श्री हारून रशिद, पूर्व प्राचार्य, आरिन्टल कॉलेज, पटना
श्री अनिल पतंग, हाई स्कूल, शिक्षक, वाथा गुमती, बेगुसराय ।

समन्वयक :

डॉ० सुरेन्द्र कुमार, व्याख्याता, एस० सी० ई० आर० टी०, पटना ।
श्री इम्तियाज आलम, व्याख्याता, एस० सी० ई० आर० टी०, पटना ।

बिहार विद्यालय परीक्षा समिति (उच्च माध्यमिक) की समीक्षा समिति के सदस्य

डॉ० सुरेन्द्र स्निग्ध, प्रोफेसर, हिंदी विभाग, पटना विश्वविद्यालय, पटना ।
डॉ० गीता द्विवेदी, अध्यक्ष, हिंदी विभाग. मगध महिला कॉलेज, पटना विश्वविद्यालय, पटना ।

अकादमिक सहयोग :

श्री ज्ञानदेव मणि त्रिपाठी, प्राचार्य, तपिन्दु इंस्टीच्यूट ऑफ हायर स्टडीज, पटना ।

आमुख

यह पुस्तक राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 एवं बिहार पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2006 के आलोक में निर्मित नवीन पाठ्यक्रम (2007) के आधार पर तैयार की गई है । इस पुस्तक के निर्माण में इस बात का ध्यान रखा गया है कि "शिक्षा का मतलब बिहार के स्कूली शिक्षार्थियों को इतना सक्षम बना देना है कि वे अपने जीवन का सही-सही अर्थ समझ सकें, अपनी समस्त योग्यताओं का समुचित विकास कर सकें, अपने जीवन का मकसद तय कर सकें और उसे प्राप्त करने हेतु यथासंभव सार्थक एवं प्रभावी प्रयास कर सकें, और साथ-ही-साथ इस बात को भी समझ सकें कि समाज के दूसरे व्यक्ति को भी ऐसा ही करने का पूर्ण अधिकार प्राप्त है ।" राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 एवं बिहार पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2006 हमें बताती हैं कि शिक्षार्थी के स्कूली जीवन और स्कूल से बाहर के जीवन में अंतराल नहीं होना चाहिए । किताब और किताब से बाहर की दुनिया आपस में गुँथी होनी चाहिए । आशा है कि यह कदम राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) में वर्णित बाल केंद्रित व्यवस्था की दिशा में काफी दूर तक ले जाएगा ।

इस पुस्तक में बच्चों की कल्पनाशक्ति के विकास, उनकी गतिविधियों की सृजनशीलता, उनके सवाल करने और उनका उत्तर पाने के मौलिक अधिकार के समुचित संरक्षण और उसे रचनात्मक दिशा देने की कोशिश की गई है । निश्चय ही इसमें छात्रों के साथ-साथ शिक्षकों की भी गहरे लगाव के साथ उतनी ही भूमिका होनी चाहिए । छात्रों के प्रति संवेदना और सहानुभूति के साथ उन्हें पुस्तक में गहरी सक्रिय सहभागिता बरतनी होगी और लेखक परिचय, मूल पाठ और उसके साथ संलग्न अभ्यास प्रश्नों के संदर्भ में समुचित जागरूकता दिखानी होगी । हर पाठ के साथ अनेक तरह के अभ्यास हैं जिनसे छात्रों की पाठ पर पकड़ तो बनेगी ही, साथ ही उनके भीतर व्यापक जिज्ञासा को प्रोत्साहन मिलेगा ।

पुस्तक की परिकल्पना में अनेक महत्त्वपूर्ण बातों का ध्यान रखा गया है । भाषा और साहित्य के ढर्रे में बँधे घेरों को सकारात्मक स्तर पर तोड़ने और वृहत्तर अनुभव क्षेत्रों को उनसे जोड़ने के साथ-साथ वैविध्यपूर्ण पाठ शृंखला को उबाऊ होने से बचाते हुए ऐसा प्रयत्न किया गया है कि पाठ बोझिल न हों तथा सामयिक जीवन संदर्भों से जुड़ कर छात्र के लिए रोचक बन जाएँ । छात्र उत्सुकता और आनंद के साथ तनावमुक्त रीति से उन्हें पढ़ते हुए बहुविध जानकारी प्राप्त करें और उस जानकारी का ज्ञान के सृजन में उपयोग कर सकें ।

एस० सी० ई० आर० टी० सर्वप्रथम इस पुस्तक में शामिल रचनाकारों, उनके प्रकाशकों एवं परिवारजनों के प्रति विशेष आभार प्रकट करती है, भाषा विभागाध्यक्ष डॉ० कासिम खुर्शीद, व्याख्याता, इम्तियाज आलम एवं डॉ० सुरेन्द्र कुमार और साथ ही इस पुस्तक के निर्माण के लिए बनाई गई पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति के प्रति भी कृतज्ञता व्यक्त करती है । प्रो० भृगुनंदन त्रिपाठी, डॉ० हेमंत कुमार हिमांशु के प्रति हम विशेष आभार प्रकट करते हैं । इन्होंने गहरी सूझबूझ, अथक परिश्रम और भावात्मक लगाव के साथ इस कार्य को तत्परतापूर्वक संपन्न किया । पुस्तक की कंपोजिंग, पेज मेकिंग और टाइप सेटिंग के लिए एरिश कंप्यूटर और अखिलेश कुमार बधाई के पात्र हैं ।

पुस्तक आपके हाथों में है । इसे पढ़ने-पढ़ाने के प्रसंग में हुए अनुभवों से उपजे परामर्शों एवं सुझावों की हमें हमेशा प्रतीक्षा रहेगी ।

निदेशक
राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण
परिषद्, बिहार

प्रस्तुत पुस्तक

'गोधूलि, भाग-2' बिहार राज्य के कक्षा - 10 के छात्रों के लिए हिंदी विषय की पाठ्यपुस्तक है । इसे शोध एवं प्रशिक्षण परिषद् (एस० सी० ई० आर० टी०), बिहार के तत्त्वावधान में निर्मित नवीन पाठ्यक्रम के आलोक में तैयार किया गया है । अनेक विमर्शों से गुजरकर पुस्तक प्रकाश्य रूप ग्रहण कर सकी । इन विमर्शों में बिहार राज्य की संबद्ध कक्षा की पाठ्यपुस्तक, प्रादेशिक परिवेश, सामयिक-शैक्षणिक वास्तविकताएँ एवं आवश्यकताएँ तथा हिंदी भाषा-साहित्य के अतीत और वर्तमान का प्रासंगिक बोध बनाए रखा गया है । हिंदी भाषा-साहित्य के निर्माण एवं विकास में आदिकाल से ही बिहार की उल्लेखनीय भूमिका रही है । इस भूमिका की पुस्तक की परिकल्पना और स्वरूप ग्रहण में बोध और स्मृति बनाए रखी गई है । निश्चय ही यह बोध एवं स्मृति परिग्रहमूलक न होकर चयनधर्मी है । हमारे चयन में वस्तुपरक निष्पक्षता, स्थायित्व तथा हिंदी भाषा-साहित्य की अंतर्प्रादेशिक राष्ट्रीय प्रकृति के अनुरूप विशदता रहे; इतना ही नहीं, सामाजिक-सांस्कृतिक सद्भाव, जनतांत्रिकता और विवेकनिष्ठा के साथ-साथ अनेक प्रकार की संक्रामक संकीर्णताओं का सक्रिय निषेध भी दिखे, इसका प्रयत्न किया गया है ।

पुस्तक में काव्य एवं गद्य के दोनों खंडों में बारह-बारह रचनाएँ हैं । इनमें हिंदी की स्थानीय जड़ों, राष्ट्रीय व्याप्तियों, अंतर्भाषिक संबंधों और अंतरराष्ट्रीय सरोकारों को एक संहति में प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है । गद्यखंड में सजगतापूर्वक तीन ऐसी कहानियाँ रखी गई हैं जिनके केंद्र में बच्चा है । तीनों कहानियों में हिंदी प्रदेश की माटी-पानी-हवा और चेतना की अभिव्यक्ति है । उसके साथ ही हिंदी की अपनी भारतीयता की विशिष्ट अभिव्यक्ति भी है । गद्यखंड में श्रम विभाजन और जाति प्रथा पर भारतरत्न बाबा साहेब भीमराव अंबेदकर का सुप्रसिद्ध निबंध तथा शिक्षाशास्त्र पर राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी का निबंध 'शिक्षा और संस्कृति' यहाँ प्रस्तुत हैं । विश्वविख्यात भारतविद् मैक्समूलर का प्रसिद्ध भाषण यहाँ 'भारत से हम क्या सीखें' शीर्षक के अंतर्गत प्रस्तुत है । इसके अतिरिक्त नागरी लिपि के ऐतिहासिक विकास के प्रामाणिक विवरण प्रस्तुत करता हुआ गुणाकर मुले का निबंध भी दिया गया है । शायद किसी पाठ्यपुस्तक में लिपि पर प्रस्तुत यह पहला पाठ है । कला के दो प्रमुख रूपों नृत्य और संगीत की दो विश्वविख्यात विभूतियों क्रमशः भारतरत्न उस्ताद बिस्मिल्ला खाँ और पंडित बिरजू महाराज से संबंधित महत्त्वपूर्ण रचनाएँ भी यहाँ दी गई हैं । बिरजू महाराज से सुप्रसिद्ध नृत्यांगना रश्मि वाजपेयी ने बातचीत की है । इस संलाप में बिरजू महाराज का अंतरंग जीवन झलक उठा है । 'नाखून क्यों बढ़ते हैं' शीर्षक ललित निबंध मानव सभ्यता के विकास के बारे में महत्त्वपूर्ण जानकारी देते हुए छात्रों के भीतर सभ्यता और संस्कृति के प्रति व्यापक जिज्ञासाएँ बढ़ाता है । रामविलास शर्मा का निबंध 'परंपरा का मूल्यांकन' सामाजिक विकास के साथ साहित्य की परंपराओं के विकास का भी विवेक जगाता है ।

काव्यखंड में मध्यकालीन तीन प्रमुख कवियों के साथ आधुनिक काल के प्रमुख कवियों के बीच से प्रासंगिक रचनाओं का चयन किया गया है । इन रचनाओं के द्वारा संवेदना, विचार और समझ के धरातल पर साहित्य की आस्वादकता छात्रों में बढ़े तथा उनके सौंदर्यबोध का परिष्कार हो – इस लक्ष्य को ध्यान में रखा गया है । काव्यखंड में एक हिंदीतर भारतीय कवि तथा एक विश्व कवि की कविताएँ प्रस्तुत की गई हैं । इनके पीछे हमारा यह उद्देश्य है कि छात्र व्यापक भारतीय एवं वैश्विक फलक पर अपनी भाषा के काव्य विकास की समझ विकसित कर सकें ।

काव्यखंड के नामकरण के लिए प्रसिद्ध कवि अरुण कमल के प्रति हम आभार व्यक्त करते हैं । आशा है, यह पुस्तक नई पीढ़ी के भाषा-साहित्य के पाठकों और बिहार के शिक्षार्थियों को रुचिकर प्रतीत होगी ।

भाषा शिक्षा विभाग
राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण
परिषद्, बिहार

अनुक्रमणी

गद्यखंड

1.	भीमराव अंबेदकर	श्रम विभाजन और जाति प्रथा (निबंध)	1
2.	नलिन विलोचन शर्मा	विष के दाँत (कहानी)	6
3.	मैक्समूलर	भारत से हम क्या सीखें (भाषण)	14
4.	हजारी प्रसाद द्विवेदी	नाखून क्यों बढ़ते हैं (ललित निबंध)	25
5.	गुणाकर मुले	नागरी लिपि (निबंध)	34
6.	अमरकांत	बहादुर (कहानी)	42
7.	रामविलास शर्मा	परंपरा का मूल्यांकन (निबंध)	55
8.	पं० बिरजू महाराज	जित-जित मैं निरखत हूँ (साक्षात्कार)	63
9.	अशोक वाजपेयी	आविन्यों (ललित रचना)	77
10.	विनोद कुमार शुक्ल	मछली (कहानी)	84
11.	यतीन्द्र मिश्र	नौबतखाने में इबादत (व्यक्तिचित्र)	91
12.	महात्मा गाँधी	शिक्षा और संस्कृति (शिक्षाशास्त्र)	102

काव्यखंड

1.	गुरु नानक	राम बिनु बिरथे जगि जनमा, जो नर दुख में दुख नहिं मानै	110
2.	रसखान	प्रेम-अयनि श्री राधिका, करील के कुंजन ऊपर वारौं	114
3.	घनानंद	अति सूधो सनेह को मारग है, मो अँसुवानिहिं लै बरसौ	117
4.	प्रेमघन	स्वदेशी	120
5.	सुमित्रानंदन पंत	भारतमाता	124
6.	रामधारी सिंह दिनकर	जनतंत्र का जन्म	129
7.	स० ही० वात्स्यायन अज्ञेय	हिरोशिमा	134
8.	कुँवर नारायण	एक वृक्ष की हत्या	138
9.	वीरेन डंगवाल	हमारी नींद	142
10.	अनामिका	अक्षर-ज्ञान	145
11.	जीवनानंद दास	लौटकर आऊँगा फिर	148
12.	रेनर मारिया रिल्के	मेरे बिना तुम प्रभु	152